"औरंगजेब की दक्षिण नीति"

B.A - SEMESTER IV   Paper - IX (9th)

औरंगज़ेब का जन्म 3 नवंबर, 1618 ई० को उज्जैन के निकट दोहद नामक स्थान पर हुआ था। 18 मई, 1637 ई० को औरंगज़ेब का विवाह दिलरास बानो बेगम से हुआ था।

सामूगढ़ की विजय के बाद आगरा पर अधिकार कर लेने के बाद औरंगज़ेब ने 21 जुलाई, 1658 ई० को दिल्ली में अपना प्रथम राज्याभिषेक करवाया और अबुल मुजफ्फर आलमगीर की उपाधि धारण की। पुन: 5 जून 1659 ई० को दिल्ली में उसने अपना औपचारिक राज्याभिषेक करवाया।

दक्षिण नीति

राज्यकाल के प्रथमार्द्ध में औरंगज़ेब का ध्यान उत्तर के मामलों में उलझा हुआ था लेकिन मराठों के उदय के साथ इस राजनैतिक परिदृश्य में परिवर्तन आया।

औरंगज़ेब दक्षिण के राज्यों के स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त करना चाहता था, क्योंकि बिना इसके अस्तित्व को समाप्त किये मराठों की शक्ति को समाप्त करना असंभव था।

दक्षिण की पाँच स्वतंत्र सल्तनतों में बरार को 1574 ई० में मुर्तजा खान ने अहमदनगर में मिलाया तथा बीदर को 1619 ई० में इब्राहिम आदिलशाह II ने बीजापुर में मिला लिया था।

1682 ई० में अपने पुत्र शाहजादा अकबर का पीछा करते हुये औरंगज़ेब दक्षिण भारत पहुँचा किंतु उसके पश्चात् उसे उत्तर-भारत में आने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ। कहा जाता है कि:- यही दक्षिण भारत औरंगज़ेब का कब्रिस्तान सिद्ध हुआ।

औरंगज़ेब ने 1665 ई० में राजा जयसिंह को बीजापुर एवं शिवाजी का दमन करने के लिए भेजा। फलस्वरूप सर्वप्रथम जयसिंह ने शिवाजी को 'पुरंदर की संधि-1665 ई' करने के लिए विवश कर दिया, किंतु उसे बीजापुर के विरुद्ध सफलता नहीं मिली और रास्ते में जयसिंह की मृत्यु हो गई।

1676 ई० में मुगल सूबेदार दिलेर खान ने बीजापुर के मंत्री मसूद को मिलाकर संधि करने के लिए विवश कर दिया और सुल्तान की बहन शहजादी शहरबानू का विवाह शहजादा आज़म के साथ करने के लिए दिल्ली भेज दिया।

22 सितंबर 1686 ई० को अंतिम आदिलशाही सुल्तान सिकंदर आदिलशाह ने औरंगजेब के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और फलस्वरूप बीजापुर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया। औरंगजेब ने सिकंदर आदिलशाह का स्वागत किया। उसे खान का पद दिया एवं 1 लाख रुपये वार्षिक पेंशन (जागीर)

बीजापुर को साम्राज्य में मिलाने के बाद औरंगजेब ने 1686 ई० में ही शाहजादा शाह आलम को गोलकुंडा पर आक्रमण करने के लिए भेजा, क्योंकि गोलकुंडा को साम्राज्य में मिलाकर ही औरंगजेब मराठों से संघर्ष करना चाहता था। 1687 ई० में औरंगजेब ने स्वयं ही गोलकुंडा पर आक्रमण किया, किंतु आठ महीने के घेरे के बावजूद मुगलों को कोई सफलता नहीं मिली।

अंत में औरंगजेब ने एक अफगान अब्दुल्लानी को लालच देकर किले का फाटक खुलवा लिया, और अक्टूबर 1687 ई० में गोलकुंडा के किले को जीत लिया।

औरंगजेब के दक्षिण में लड़े गये युद्धों को दो भागों में विभक्त किया जाता है। प्रथम उपरोक्त बीजापुर एवं गोलकुंडा के विरुद्ध युद्ध एवं विलय एवं दूसरा मराठों के विरुद्ध युद्ध।

मराठों के विरुद्ध युद्ध

औरंगजेब का शिवाजी के साथ पहला संघर्ष 1656 ई० में तब आरंभ हुआ जब शिवाजी ने अहमदनगर और जुन्नार किले पर आक्रमण किया।

औरंगजेब ने 1665 ई० में जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध भेजा। जयसिंह ने शिवाजी को 22 जून 1665 ई० को 'पुरंदर की संधि' करने के लिए विवश कर दिया। पुरंदर की संधि के फलस्वरूप शिवाजी को अपने 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े तथा बीजापुर के खिलाफ मुगलों की सहायता करने देने का वचन देना पड़ा।

पुरंदर की संधि की शर्तों के तहत शंभा जी को मुगल दरबार में पंचहजारी मनसब देना, जागीर देना, तथा शिवाजी का मुगल दरबार में उपस्थित होना।

शिवाजी के मृत्यु के बाद उसके पुत्र शंभाजी ने औरंगजेब से संघर्ष जारी रखा किंतु 1689 ई० वह अपने मंत्री कलश के साथ पकड़ा गया और 1689 ई० में शंभा जी का कत्ल कर दिया गया।

1690 ई० तक औरंगजेब के नेतृत्व में मुगल साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था, जो काबुल से लेकर चटगांव और कश्मीर से लेकर कावेरी तक विस्तृत था।

शंभा जी की मृत्यु के बाद उसके सौतेले भाई राजाराम के नेतृत्व में मराठों का मुगलों से संघर्ष जारी रहा।

औरंगजेब की यही दक्षिण नीति उसके स्वयं तथा मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बनी। कहा जाता है कि जिस प्रकार 'स्पेन के नासूर ने नेपोलियन को पतन के रास्ते पर ला खड़ा किया, उसी प्रकार दक्षिण के नासूर ने औरंगजेब का पतन अनिवार्य कर दिया।'

कहा जाता है कि औरंगजेब अपने शासनकाल के लगभग अंतिम 25 वर्ष अपने दक्षिण अभियान में लगा रहा। 50 वर्ष तक शासन करने के बाद उसकी मृत्यु दक्षिण के अहमदनगर में 3 मार्च सन् 1707 में हो गई। दौलताबाद में उसे दफना दिया गया। हालांकि औरंगजेब अपने व्यक्तिगत जीवन में एक आदर्श व्यक्ति था। वह सादा जीवन जीता था। खान-पान, वेशभूषा और जीवन की अन्य सुविधाओं में वह संयम बरतता था। औरंगजेब ने भारतीय उपमहाद्वीप पर आधी सदी से भी ज्यादा शासन किया। वह अकबर के बाद सबसे अधिक समय तक शासन करने वाला मुगल शासक था।

Rajesh Kr. Singh. Asst. Prof. History, D.S.P.M.U.